ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

आज़ादी के आंदोलन में वर्धा घोषणा-पत्र एक महत्वपूर्ण दस्तावेज – कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, दि. 15 जुलाई 2021 : आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत छोड़ो आंदोलन के अंतर्गत महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र की ओर से वर्धा घोषणा-पत्र पर 14 जुलाई 2021 को

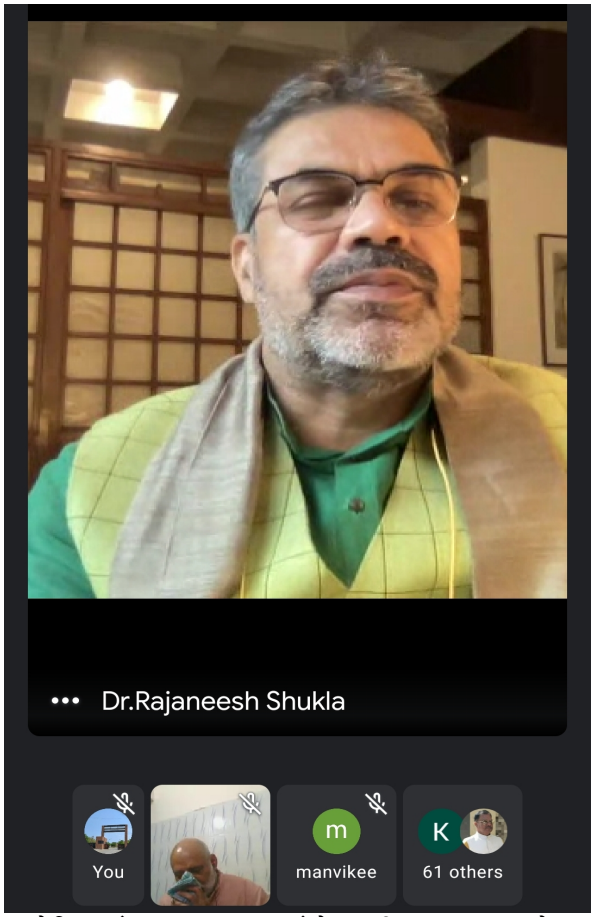

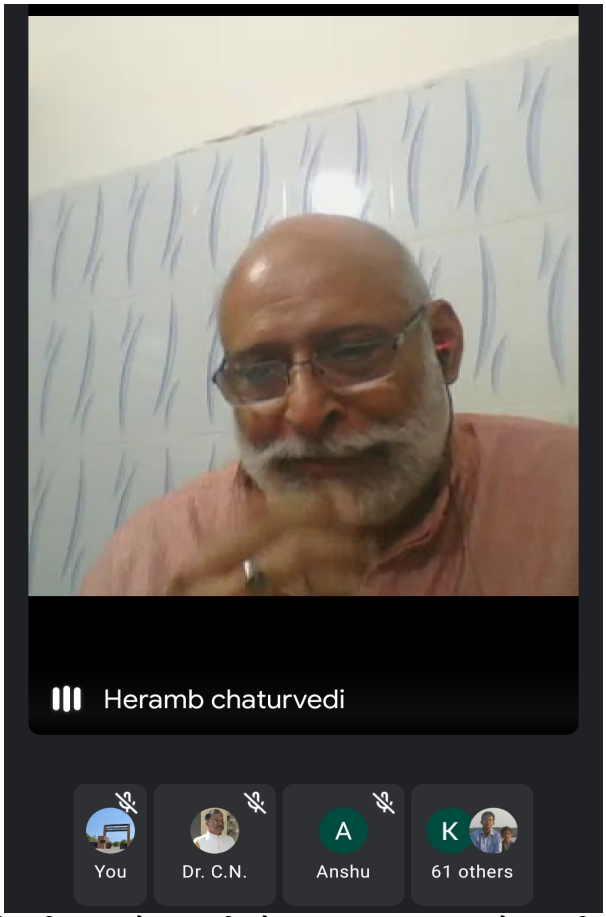

आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि आज़ादी के आंदोलन का शंखनाद करने की दृष्टि से महात्मा गांधी द्वारा तैयार किया गया वर्धा घोषणा-पत्र एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। महात्मा गांधी ने 9 जुलाई 1942 को वर्धा घोषणा-पत्र का प्रारूप तैयार किया था जिसे 14 जुलाई 1942 को वर्धा में आयोजित कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में प्रस्तुत किया गया।

प्रो. शुक्ल ने वर्धा घोषणा-पत्र के संदर्भ में आज़ादी से जुड़े अनछुये पहलुओं को अपने व्याख्यान में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि 1942 का आंदोलन गांधी केंद्रित था। गांधी जी ने 9 जुलाई को वर्धा घोषणा-पत्र का मसौदा पं. जवाहरलाल नेहरू को भेजा था। वर्धा प्रस्ताव ने आज़ादी का मुक्कमल रास्ता प्रदर्शित किया था। उन्होंने कहा कि गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस महान राष्ट्रभक्त थे और आज़ादी को लेकर दोनों के मन में कोई संशय नहीं था। उन्होंने कहां कि जहां 1857 का आंदोलन बहुत लंबा चला वहीं 1942 का आंदोलन मात्र दो-ढाई महीने में समाप्त हुआ। यह आंदोलन दो ध्रुव का आंदोलन था। उनका कहना था कि ब्रितानी हुकुमत से भारत को आज़ाद करने के लिए आंदोलन के शिवाय कोई रास्ता नहीं है इसपर गांधी जी और नेताजी एकमत थे। कुलपति प्रो. शुक्ल ने कहा

कि 1942 का आंदोलन हिंसा और अहिंसा के विवाद से परे केवल संपूर्ण आज़ादी का आंदोलन था। उन्होंने आज़ादी के आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में गांधी जी द्वारा लिखे गए महत्वपूर्ण पत्र और गांधी-नेताजी में हुए संवाद को व्याख्यायित किया।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए सुविख्यात इतिहासविद तथा इलाहबाद विश्वविद्यालय के मानविकी एवं कला संकाय के अध्यक्ष प्रो. हेरंब चतुर्वेदी ने 1857 से लेकर 1942 तक के दौरान की ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत को आज़ादी दिलाने के लिए 14 जुलाई 1942 का विशेष महत्व है। गांधी जी ने तत्काल स्वतंत्रता की मांग करते हुए करेंगे या मरेंगे का मंत्र दिया था। उन्होंने कहा कि आज़ादी की दृष्टि से 1857 और 1942 इन दो क्रांतियों का बड़ा महत्व है। उन्होंने गांधी के असहयोग आंदोलन तथा चौरी-चौरा की घटना के साथ-साथ पं. जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और स्वामी सहजानंद सरस्वती आदि के योगदान को रेखांकित किया।

कार्यक्रम की प्रस्तावना महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने रखी। उन्होंने कहा कि वर्धा घोषणा-पत्र से भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य केंद्र के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. के. बालराजु ने दिया। कार्यक्रम का संचालन केंद्र के सहायक प्रोफेसर डॉ मिथिलेश कुमार ने किया तथा धन्यवाद सहायक प्रोफेसर डॉ. शिव सिंह बघेल ने ज्ञापित किया। संगोष्ठी का प्रारंभ गांधी जी के प्रिय भजन 'वैष्णव जन से' और समापन राष्ट्रगीत के साथ हुआ। संगोष्ठी में प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट सहित अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

स्वातंत्र्य चळवळीत वर्धा घोषणा-पत्र महत्वाचा दस्तावेज – कुलगुरू प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, दि. 15 जुलै 2021 : स्वातंत्र्य चळवळीचा शंखनाद करण्याच्या दृष्टीने महात्मा गांधी यांनी तयार केलेले वर्धा घोषणा-पत्र हा एक महत्वाचा दस्तावेज होय असे प्रतिपादन महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांनी केले. ते महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्रा मार्फत आयोजित राष्ट्रीय चर्चासत्रात अध्यक्ष म्हणून बोलत होते. ते म्हणाले की गांधीजींनी 9 जुलै 1942 रोजी वर्धा घोषणा-पत्राचे प्रारूप तयार केले होते आणि ते प्रारूप 14 जुलै 1942 रोजी वर्धा येथे आयोजित कांग्रेस कार्य समितीच्या बैठकीत सादर करण्यात आले होते. या प्रस्तावाने स्वातंत्र्यप्राप्तीचा मार्ग प्रदर्शित केला होता.

प्रो. शुक्ल यांनी वर्धा घोषणा-पत्राच्या संदर्भात अनेक बाबींचा उल्लेख आपल्या भाषणात केला. ते म्हणाले की भारताला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यासाठी आंदोलना शिवाय अन्य कोणताही मार्ग नाही यावर गांधीजी आणि नेताजी सुभाष चंद्र बोस यांचे एकमत होते. हे आंदोलन संपूर्ण स्वातंत्र्याचे आंदोलन होते असेही ते म्हणाले.

मुख्य वक्ता म्हणून बोलतांना इतिहासतज्ज्ञ, अलाहाबाद विश्वविद्यालयातील मानविकी व कला शाखेचे अध्यक्ष प्रो. हेरंब चतुर्वेदी यांनी 1857 पासून 1942 या काळातील ऐतिहासिक घटनांचा उल्लेख केला. भारताला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यासाठी 14 जुलै 1942 चे विशेष महत्व आहे. यासाठी गांधीजींनी त्वरित स्वातंत्र्याची मागणी करत करेंगे या मरेंगे हा मंत्र दिला होता. स्वातंत्र्याच्या दृष्टीने 1857 आणि 1942 या दोनही क्रांतीचे ऐतिहासिक महत्व आहे. त्यांनी गांधीजीचे असहयोग आंदोलन तथा चौरी-चौरा येथील घटना या बरोबरच पं. जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचंद्र बोस आणि स्वामी सहजानंद सरस्वती इत्यादिंच्या योगदानावर प्रकाश टाकला.

कार्यक्रमाची प्रस्तावना महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्राचे निदेशक प्रो. मनोज कुमार यांनी मांडली. स्वागत केंद्राचे एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. के. बालराजु यांनी केले. कार्यक्रमाचे संचालन केंद्राचे सहायक प्रोफेसर डॉ. मिथिलेश कुमार यांनी केले तर आभार सहायक प्रोफेसर डॉ. शिव सिंह बघेल यांनी मानले कार्यक्रमाचा प्रारंभ गांधीजींचे प्रिय भजन 'वैष्णव जन' ने करण्यात आला तर वंदे मातरम ने समारोप करण्यात आला. यावेळी प्रकुलगुरू प्रो. चंद्रकांत रागीट यांच्यासह अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, अध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित होते.